अमूर्त प्रत्यय का खंडन (Rejection of Abstract Ideas)

बाह्य द्रव्यों की सत्ता के लिए जॉन लॉक ने एक प्रमाण दिया था कि हम अमूर्त प्रत्यय अर्थात काल्पनिक सामान्य या जाति के प्रत्यय के आधार पर द्रव्य का ज्ञान प्राप्त करते हैं| जैसे हम विशेषणों (व्यक्तियों) के आधार पर सामान्य की कल्पना करते हैं, यथा विविध मनुष्यों को देखकर मनुष्यत्व की कल्पना करते हैं, वैसे ही विभिन्न गुणों के आश्रय के रूप में द्रव्य सामान्य की कल्पना करते हैं| बर्कले ने बताया कि यह अमूर्त या काल्पनिक प्रत्यय असंभव है| हम इंद्रियों द्वारा विशेषण का ही ज्ञान कर सकते हैं, सामान्य का नहीं| सामान्य मनुष्य की कल्पना करते ही किसी मनुष्य विशेष की आकृति मनुष्य में आती है| काल्पनिक प्रत्यय वदतोव्याघात है| सारे विज्ञान या प्रत्यय वास्तविक होते हैं| ज्ञान का विषय सदा संवेदन या स्वसंवेदन होता है और यह एक विशेष और वास्तविक प्रत्यय होता है| बर्कले सामान्य एवं सार्वभौम प्रत्ययों की सत्ता स्वीकार करते हैं| उनका मानना है कि सामान्य प्रत्यय इंद्रिय अनुभव से नहीं आते और ना इनको अमूर्त या काल्पनिक प्रत्यय कहा जा सकता है| अतः इन तथाकथित प्रत्ययों के आधार पर भी बाह्य द्रव्यों की सत्ता नहीं स्वीकार की जा सकती है|

बर्कले ने यह सिद्ध किया कि बाह्य जड़ पदार्थ का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है| हम इसका प्रत्यक्ष नहीं कर सकते; क्योंकि प्रत्यक्ष होता है तो केवल गुणों का, बाह्य पदार्थ का नहीं| गुणों के अधिष्ठान के रूप में हम बाह्य पदार्थ का अनुमान भी नहीं कर सकते, क्योंकि गुण वास्तव में संवेदन मात्र हैं और इसलिए आत्मा पर निर्भर है, बाह्य पदार्थ पर नहीं| वह आत्म निष्ठ होते हैं, वस्तुनिष्ठ नहीं| परंतु क्या इन संवेदनों को हमारी आत्मा स्वता उत्पन्न करती हैं? एक आशंका यह होती है कि भले ही संवेदन आत्मा में रहे, किंतु उन संवेदना को आत्मा में उत्पन्न करने की शक्ति तो बाह्य पदार्थ में ही माननी पड़ेगी| बाह्य पदार्थ को इन संवेदनों की उत्पत्ति का कारण मानना पड़ेगा| यदि मैं एज वस्तुतः ना हो, तो आत्मा में उनका संवेदन भी उत्पन्न नहीं हो सकता| हम बहुत से प्रत्ययों की कल्पना कर सकते हैं, किंतु बाह्य पदार्थों के अभाव में उनके संवेदन प्राप्त नहीं कर सकते| किंतु बाह्य पदार्थों के अभाव में उनके संवेदन प्राप्त नहीं कर सकते| फिर, यदि बाह्य पदार्थ हमारे प्रत्यय मात्र हो तो वे सबको लगभग एक ही रूप में क्यों प्रतीत होते हैं? यह तो स्पष्ट है कि जिन संवेदनों को इंद्रियां बाह्य पदार्थों से ग्रहण करती हैं, उन संवेदनों को हम स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकते| अतः बाह्य पदार्थ की सत्ता माननी पड़ेगी| बर्कले इसे अनावश्यक और भ्रमपूर्ण विचार कहते हैं| यह सत्य है कि इन इंद्रिय संवेदनों को हमारी आत्मा स्वत: उत्पन्न नहीं कर सकती| किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि इन संवेदनों के जनक बाह्य जड़ पदार्थ हैं| जो जड़ है, जो अशक्त है, जो ना दृष्टा है, ना दृश्य है, जो ना ज्ञाता है ना ज्ञेय है, वह बाह्य पदार्थ हमारी चेतन आत्मा पर कैसे अपने गुणों की (जो उसमें विद्यमान ही नहीं है) छाप अंकित कर सकता है? प्रत्ययों को उत्पन्न करने का सामर्थ्य जड़ में नहीं हो सकता| अतः इन प्रत्ययों की उत्पत्ति का कारण चेतन आत्मा को ही मानना पड़ेगा| और क्योंकि हमारी आत्मा इंद्रिय संवेदनों को स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकती, इसलिए इनकी उत्पत्ति का कारण परमात्मा को मानना चाहिए| ईश्वर ही इन इंद्रिय संवेदन रूपी प्रत्ययों को हमारी आत्मा में उत्पन्न करते हैं| यह सामर्थ्य जड़ द्रव्यों का नहीं हो सकता| इस तरह सिद्ध होता है कि बाह्य जड़ पदार्थों की कोई वास्तविक सत्ता नहीं है| लॉक का यह अज्ञेय बाह्य द्रव्य जिसके विषय में कहते हैं कि यह " कुछ है, किंतु मैं नहीं जानता क्या है" यह मूर्खतापूर्ण चेतना शून्य जड़ वास्तव में शून्य है|

सत्ता अनुभव-मूलक है (Esse Est Percipi)

जड़ तत्व का खंडन करके बर्कले अपने सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं| उनके सिद्धांत का आधार सूत्र है- "सत्ता अनुभव-मूलक है"| अर्थात उसी की सत्ता मानी जा सकती है जो अनुभव किया जा सकता है| इसके विपरीत उनकी कोई सत्ता नहीं है जिनका अनुभव संभव नहीं है| अनुभव कर्ता है आत्मा और अनुभव के विषय है प्रत्यय| अतः आत्मा और उसके प्रत्ययों के अतिरिक्त और किसी की सत्ता नहीं है| ईश्वर भी आत्म स्वरुप हैं, वे परमात्मा है| प्रत्यय अजड़ हैं| वे बाह्य पदार्थों के प्रतिबिंब या प्रतिकृति नहीं है| वे आत्मनिष्ठ हैं, बाह्य वस्तुनिष्ठ नहीं है| प्रत्यय बाह्य कोई विषय नहीं| जड़ तत्व की कोई सत्ता नहीं| प्रत्यय के दो रूप हैं- संवेदन और स्वसंवेदन| संवेदनों की सृष्टि ईश्वर करते हैं| स्वसंवेदनों की सृष्टि आत्मा करती है| बर्कले के अनुसार आत्मा और उसके प्रत्ययों के अतिरिक्त कोई सत्ता नहीं| हमारे प्रत्यय ही सत्य वस्तुएं हैं| बर्कले की प्रसिद्ध उक्ति है- " मैं वस्तुओं को प्रत्यय नहीं बनाता, मैं प्रत्ययों को वस्तु बना रहा हूं|" प्रत्यय ही सत्य विषय हैं और उनकी सत्ता आत्मा के बाहर नहीं है| संसार के समस्त दृश्य पदार्थ घट, पट, मेज, कुर्सी, पेड़-पौधे, सूरज, चांद, तारे आदि सब हमारे ही प्रत्यय हैं| सब आत्मा में विद्यमान हैं| प्रतीति का विषय होना या अनुभव किया जाना अस्तित्व का द्योतक है| मान लीजिए, मेरे सामने मेज रखी है| मेज

कोई बाह्य जड़ पदार्थ नहीं है, वह प्रत्यय मात्र है और आत्मा की सृष्टि है| जब तक मैं मेज को देख रहा हूं उसका अस्तित्व है| किंतु जब मैं कमरे के बाहर चला जाऊंगा तो क्या मेज की सत्ता नहीं रहेगी? बर्कले का उत्तर है- अवश्य रहेगी| 'प्रतीति का विषय होना सत्ता का सूचक है'- इस वाक्य के अनुसार प्रतीति का विषय बनने का सामर्थ्य भी इसके अंतर्गत आ जाता है| यदि मैं कमरे में ना रहूं तो भी मेज की सत्ता बनी रहेगी, क्योंकि 1. यदि मैं कमरे में होता तो मुझे मेज की प्रतीति हो सकती थी, अर्थात मेज में मेरी प्रतीति का विषय बनने का सामर्थ्य विद्यमान है, 2. अन्य कोई व्यक्ति उस मेज की प्रतीति कर रहा हो, 3. ईश्वर को उस मेज की प्रतीति सदा हो रही है| अतः बर्कले के अनुसार प्रत्ययों की सत्ता बनी रहती है; क्योंकि उनमें प्रतीति के विषय बनने का सामर्थ्य है, क्योंकि कोई ना कोई जीव उनकी प्रतीति कर रहा है और क्योंकि ईश्वर को उनकी प्रतीति सदा हुआ करती है|